3 मई 2017 को संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा मेघदूत परिसर के पचासवें वर्ष में ज्ञान के पीठ (Chair) के रूप में ''अल्काजी'' की धातुमुद्रा के अनावरण के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. संगीत नाटक अकादमी के मेघदूत परिसर के पचासवें वर्ष में ज्ञान के पीठ (Chair) के रूप में ''अल्काजी'' की धातुमुद्रा के अनावरण के अवसर पर यहां उपस्थित सभी कलाप्रेमियों, सुधीजनों के बीच आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आधुनिक भारतीय रंगमंच के क्षेत्र में अल्काजी का योगदान अत्यन्त उल्लेखनीय, सराहनीय एवं प्रेरणादायी है। उन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से रंगमंच के क्षेत्र में कई नवीन प्रयोग किए एवं रंगमंच को दूरगामी प्रभाव, परिवर्तन एवं दिशा दी। कलाप्रेमी जानते हैं कि वे अपने काम में बहुत निष्णात, सुनियोजित अर्थात् meticulous, perfectionist और systematic हैं। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के निदेशक के रूप में उन्होंने प्रशिक्षण व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। He taught his students that theatre was not merely a hobby but a profession, which required serious dedication like any other profession. इस कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति बहुत ही प्रेरणादायी एवं हर्ष का विषय है।

2. उनका मानना है कि रंगमंच एक ऐसी गम्भीर विधा है जिसे आत्मसात् करने के लिए शरीर, मन, मेधा और आत्मा सभी का सुसंयोग एवं संयोजन आवश्यक है और इसीलिए अपने Students को उन्होंने योग सीखने के साथ–साथ सर्वांगीण विकास एवं नाट्य विधा के श्रेष्ठ विद्यार्थी बनाने के लिए अन्य कला (performing arts) जैसे संगीत, नृत्य, पेंटिंग्स जैसी चीजों को

सीखने के लिए प्रेरित किया। उनकी छवि एक बहुत अनुशासनप्रिय गुरू के रूप में थी। लेकिन मैंने यह भी सुना है कि उनके कई शिष्य सुबह छह बजे योग करने के लिए उस समय बहुत उत्साहित नहीं रहते थे। नाटक से जुड़ा हरेक विभाग अल्काज़ी साहब के लिए बेहद महत्वपूर्ण था इसलिए उनके सारे विद्यार्थी सर्वगुण सम्पन्न हुए। उनकी इसी प्रेरणा, अनुशासन एवं प्रशि़क्षण से ही भारत को रंगमंच के कई उत्कृष्ट कलाकार मिले जिनमें नसीरूद्दीन शाह, विजया मेहता, ओम पुरी, ओम शिवपुरी, गिरीश कनार्ड, रोहिणी हटंगड़ी जैसे और भी अन्य प्रतिष्ठित नाम हैं।

3. आज इस धातुमुद्रा के अनावरण का कार्यक्रम न केवल एक व्यक्ति, उसके कार्य एवं उपलब्धियों के प्रति मान–सम्मान दर्शाता है बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का कार्य भी करता है। ऐसे मान–सम्मान प्रकाश स्तम्भ (Light House) की तरह होते हैं। जैसे कि समुद्र में प्रकाश स्तम्भ आने–जाने वाले जहाजों को मार्ग दिखलाता है, वैसे ही यह धातुमुद्रा आने वाली पीढ़ियों एवं रंगमंच के कलाकारों को न केवल माननीय इब्राहिम अल्काजी के द्वारा नाट्यक्षेत्र में किए गए उनके उत्कृष्ट कार्यों की याद दिलाएगी बल्कि एक प्रेरणा के रूप में यहां प्रशिक्षण लेने वाले प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन करती रहेगी।

4. भारत में रंगमंच का इतिहास एवं परम्परा अत्यन्त प्राचीन एवं गौरवशाली रही है। चाहे कालिदास की अमर कृतियां ''मालविकाग्निमित्र'' या ''अभिज्ञानशाकुन्तलम'' हो अथवा भवभूति की रचना ''मालती माधव'' या उत्तर राम चरित जैसी लोकप्रिय रचना हो या सम्राट हर्षवर्धन की रत्नावली,

प्रियदर्शिका हो या नागानन्द जैसी कालजयी रचनाएं हो, ये नाटक आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं जितने आज से हजार–पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व लोकप्रिय थे।

5. प्राचीन भारत में नाटक संचार का महत्वपूर्ण साधन और मनोरंजन का प्रमुख माध्यम होते थे। हमारे यहां मंच कला से जुड़ी भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र नामक पुस्तक है। इसमें थिएटर के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया गया है। इस पुस्तक के अनुसार, थिएटर के ग्रुप में सत्रह लोग होने चाहिएं जो अन्य विशेषताओं के साथ–साथ मंच–सज्जा, अभिनय, संगीत और नृत्य जैसी विभिन्न कलाओं में पारंगत हों। इससे हमें पता चलता है कि हमारे पूर्वज कार्यकलापों के सभी क्षेत्रों का संयोजन कितने वैज्ञानिक ढंग से करते थे। रंगमंच एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मानव की विभिन्न रुचियों की संतुष्टि होती है। भीमा मुनि के शब्दों में इस मान्यता की पुष्टि होती हैः–

''हितोपदेश जननम् नाट्यमेतद् भविष्यति।
विनोदकरणम लोके नाट्यमेतद् भविष्यति।।''

कहने का तात्पर्य है कि नाटक हितोपदेश व लोगों के मनोरंजन के लिए किए जाते हैं।

6. राष्ट्रीय रंगमंच की तरह भारत में क्षेत्रीय रंगमंच भी बहुत सशक्त रहा है चाहे वह केरल का कोडिअट्टम हो, कर्नाटक का यक्षगान हो, उत्तर प्रदेश का स्वांग हो या महाराष्ट्र का तमाशा हो, इन सबकी अत्यन्त गौरवशाली परम्परा, इतिहास और सामाजिक योगदान रहा है। नाटक अथवा रंगमंच समाज में किसी संदेश, जनजागृति फैलाने का अत्यन्त सशक्त माध्यम है और इसके सामाजिक योगदान के महत्व को सब मानते हैं। क्योंकि देश–विदेश में नाटकों के माध्यम से अनेक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं को चुनौती

दी गई और समाज में जागरूकता लाने एवं जनमत बनाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतंत्रता के आन्दोलन में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान था।

7. श्री इब्राहिम अल्काजी मानते हैं कि नाटक समाज को दिशा देने एवं समाज की झलक दिखाने का एक बहुत महत्वपूर्ण माध्यम है। उनका जीवन, जीवन शैली, उनका रंगमंच के प्रति समर्पण व योगदान सबके लिए प्रेरणादायी है और यहां मैं उल्लेख करना चाहूंगी कि उनका पूरा परिवार रंगमंच के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं।

8. हमारे देश में समृद्ध सांस्कृतिक विरासत रही है और यहां अनादि काल से ही अनेक कलात्मक विधाओं का अस्तित्व रहा है। इस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना और इसे बढ़ावा देना हमारा कर्त्तव्य है और यह हर्ष का विषय है कि संगीत नाटक अकादमी कला पारखियों और दिग्गजों के मार्गदर्शन में यह प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

9. आज राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (National School of Drama) विश्व के सबसे सम्मानित संस्थानों में से एक है। मित्रो, मुझे विश्वास है और आप सब भी इस बात से सहमत होंगे कि इब्राहिम अल्काजी ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय को उन ऊंचाइयों तक पहुंचाया जहाँ पर यह आज विद्यमान है। उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर मेघदूत परिसर की स्थापना की और आज हमारी बारी है कि हम उनके योगदान का सम्मान करें और मैं रंगमंच की जीवित किंवदंती के सम्मान के लिए संगीत नाटक अकादमी एवं यहां उपस्थित कला प्रेमियों को बधाई देती हूं।

10. मैं श्री इब्राहिम जी का हार्दिक अभिनन्दन करती हूं। साथ ही, उनके स्वस्थ, प्रसन्न एवं सुदीर्घ जीवन की कामना करती हूं। I wish him a long, healthy and happy life.

———